स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविदयालय, नांदेड
तथा भाषाविभाग हरिहर प्रतिष्ठान द्वारा संचलित

गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

के तत्वावधान में स्व. गोविंदलाल जोशी की स्मृति में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

साहित्य के नवप्रवाह

मुख्य सम्पादक
डॉ. सुजाता चव्हाण
प्र. प्रधानाचार्य

सम्पादक
प्रा. आरेफ शेख
प्रा. नयन भादुले
प्रा. अनिता चौधरी

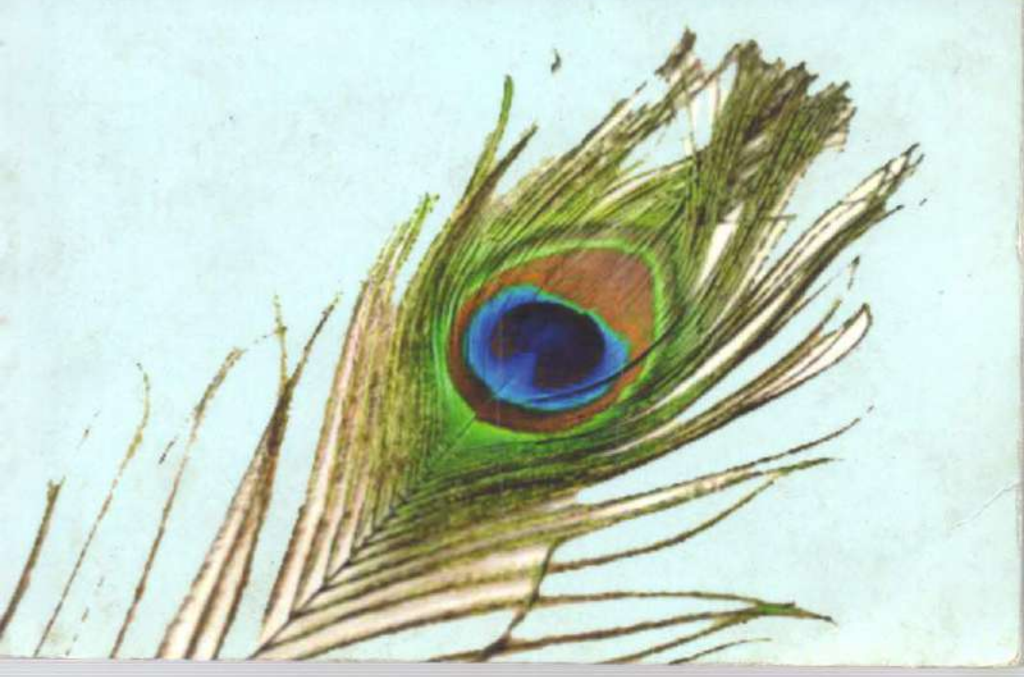

साहित्य के नवप्रवाह

- **डॉ. सुजाता चव्हाण,** मुख्य सम्पादक

प्रा. आरेफ शेख, सम्पादक

प्रा. नयन भादुले, सम्पादक

प्रा. अनिता चौधरी, सम्पादक

- प्रकाशकः
विझक्राफ्ट पब्लिकेशन्स् ॲन्ड डिस्ट्रीब्युशन प्रा. लिमिटेड,
१२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर- ४१३००१
भ्रमणध्वनी - ०९६३७३३५५५१, ०७०२०८२८५५२
ई-मेल - wizcraftpublication@gmail.com

- मुद्रकः
पालवी प्रिंटर्स,
१२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर-४१३००१

- ISBN: ९७८-९३-८६०१३-८३-५

- रुपये: ५००/-

सर्व हक्क सुरक्षित (या पुस्तिकेतील प्रकाशित माहिती पूर्व परवानगी शिवाय कुठल्याही माध्यमाव्द्वारे पुर्न प्रकाशित करता येणार नाही.)

या पुस्तकातील प्रकाशित माहिती, मते, विधान, विचार इत्यादी लेखकांचे वैयक्तिक असून लेखकांने व्यक्त केलेली मते, माहिती, विधाने, विचार, इत्यादी बाबत प्रकाशक, मुद्रक आदी सहमत असतीलच असे नाही.

13. 'नयी कहानियों में किन्नर विमर्श' 67
प्रा. चौधरी अनिता विश्वनाथ

14. 'कस्माई सिमोन' : लिव इन रिलेशन का नया आख्यान 72
प्रा.नयन भादुले-राजमाने

15. भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति 80
डॉ. ईश्वरप्रसाद रामप्रसादजी बिदादा

16. आदिवासी जीवन केंद्रित हिंदी उपन्यास : समय, समाज और संवेदना 84
प्रा.बोडखे एच.डी.

17. हिंदी साहित्य में दलित विमर्श 91
प्रा. डॉ. शहाजी चव्हाण

18. हिन्दी–मराठी दलित आत्मकथाओं मे सामाजिक चेतना 95
डॉ. व्ही. पी. चव्हाण

19. परम्परा में अपने को खोजती स्त्री अनामिका के काव्य संदर्भ में 100
आरिफ जमादार

20. 'नारी विमर्श - एक दृष्टिक्षेप' (विशेष संदर्भ : शेष कादंबरी - अलका सरावगी) 105
प्रा. डॉ. गोपाल बाहेती

21. आदिवासी साहित्य विमर्श (विशेष संदर्भ – अल्मा कबुतरी) 111
प्रा. डॉ. कडेकर सी.जी.

22. नारी के मानवी रूप का अनुशिलन 116
प्रा.डॉ. एस.एस. कदम

23. 'हिन्दी कहानी में नारी विमर्श' 121
प्रा. डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव

24. वीरांगना झलकारीबाई ...... एक दृष्टिक्षेप ! 125
प्रा.डॉ.मा.ना.गायकवाड

25. 'स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिंदी उपन्यास साहित्य' (शाल्मली के विशेष संदर्भ में) 131
डॉ. पुष्पलता अग्रवाल

26. ग्लोबल गांव के देवता विशेष संदर्भ में 136
डॉ. विजयकुमार कुलकर्णी

27. दलित विमर्श 141
डॉ.उर्मिला भिकाजीराव शिंदे

14

'कस्माई सिमोन' : लिव इन रिलेशन का नया आख्यान

प्रा.नयन भादुले-राजमाने, गोविंदलाल कन्हैय्यालाल जोशी, रात्र वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर

लिव-इन रिलेशनशीप एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें दो लोग जिनका विवाह नहीं हुआ हैं, साथ रहते हैं और एक पती-पत्नी की तरह आपस में सम्बन्ध बनाते है। यह संबंध कई बार लम्बे समय तक चल सकते हैं या फिर कम समय में समाप्त भी हो सकते है।

इस प्रकार के सम्बंध विशेष रुप से पश्चिमी देशों में बहुत आम हो चुके हैं। इस बात को पिछते कुछ दशकों में काफी बल मिला है। अभी भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने लिव-इन रिलेशनशीप के समर्थन में एक ऐतिहासिक निर्णय सुनाया है कि यदि दो लोग लंबे समय से एक-दुसरे के साथ रह रहे हैं और उनमे संबंध हैं, तो उन्हें शादी शुदा ही माना जाएगा।

भारत में लिव-इन रिलेशन कानूनी दृष्टि से वैध हैं, आज की आधुनिक काल में इनका प्रचलन काफी बढा है, पर फिर भी सामाजिक रुप से उन्हें व्यापक मान्यता प्राप्त नहीं हुई हैं। वेसै भी ग्रामीण क्षेत्रो में लिव-इन रिलेशन शायद ही कभी देखा गया हो, जब की ऐसे सम्बंध शहरी इलाकों और विशेष रुप से मेट्रो शहरों में आम हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लिव-इन रिलेशन का नया अख्यान प्रस्तुत करता है. शरद सिंहजी का उपन्यास 'कस्बाई सिमोन'

आज समाज में स्थित मान्यताओं को रुढी या दकीयानुसी विचार बताकर नकारने का चलन बडी तेजी से फैल रहा है, 'विवाह भी उनके लिए एक ऐसा ही बंधन है जिस में बँधकर उनके जिंदगी का प्यार कहीं गुम हो जाता है तथा जिम्मेदारीयों के बीच वह फस जाते हैं। युवा पिढी इसमें निजत्व का तर्क खोजती है। इसमें खामियों देखते हुए बिना शादी के संग रहने का चलन बनाये हुए है। जिसे 'लिव-इन रिलेशन' नाम दिया है। महानगर लिव-इन रिलेशन का चलन तेजी से बढता जा रहा है।

जो स्त्रियाँ अपना जीवन अपने ढंग से जीना चाहती हैं ऐसी स्त्रियों की दास्ता हैं शरद सिंहजी का 'कस्बाई सिमोन' यह उपन्यास आज २१ वी सदी में 'लिव-इन रिलेशन' महानगरो में एक नई जीवनचर्या के रुप में अपनाया जा रहा है। माना जाता है कि स्त्री इसमें अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित अनुभव करती है। उसे जीवनसाथी द्वारा दी जानेवाली प्रताडना सहने को विवश नहीं होना पडता है। वह स्वंय को स्वतंत्र पाती है। महानगरो में इस विचार को लेकर स्थितीयाँ कुछ अलग है लेकिन क्या एक कस्बाई औरत 'लिव इन रिलेशन' में मानसिक सुकून पा सकती है ? उसे किन-किन स्तरों पर समझौते करने पडते है ? इन्ही प्रश्नो के उत्तर के रुप में हम 'कस्बाई सिमोन' यह उपन्यास पाते है। खासकर इस उपन्यास की नायिका 'सुगंधा'। स्त्री देह है या देह से परे भी बहुत कुछ है, यह भी विचारणीय है इस उपन्यास में।

'सेकंड सेक्स' की लेखिका सिमोन द बोउवार का कहना है। औरत को यदि स्वतंत्रता चाहिए तो उसे पुरुष की रुष्टता को अनदेखा करना ही होगा।'[1] सुगंधा भी इसी जीवन दर्शन को अपनाती है। इन दोनो में अंतर यह है कि सिमोन पॅरीस में रहती थी और सुगंधा जबलपूर और सागर जैसे कस्बों में इसलिए वह कस्बाई सिमोन है।

लेखिकाने इस उपन्यास को 'कस्बाई सिमोन' नाम दिया है। शहरी सभ्यता में यह 'लिव इन रिलेशन' का आधुनिक विचार रोपीत हुआ है तथा पल्ल्वीत भी हो चुका है किन्तु कस्बो में आज भी लोग एक-दूसरे से जुडे हैं। एक-दुसरे के सुख दुःख में साथ देते है, सम्मिलित होते है, वहाँ इस तरह की जीवन शैली अपनानेवालों को मुसिबतों का सामना करना पडता है। इस उपन्यास की नायिका 'सुगंधा' एक कस्बे से ताल्लुक रखती है तो उसे अनेक समस्याओ से गुजरना पडता है। उसके लिए यह सब आसान नही है। यह हम उसके दफ्तर में अकाऊंट का काम करनेवाले सिकरवर के शब्दों से जान सकते है। "तुम, नीना गुप्ता, सुष्मिता सेन, या करिना कपूर नहीं हो तुम एक कस्बे की और मध्यवर्ग की लडकी हो, ये सब पैसेवालों और महानगरों के जीने के तरीके हैं, तुम जैसी लडकियाँ दुःख ही पाती हैं, चैन-सुकून, अधिकार और सम्मान नही। आगे स्वयं समझदार, हो।"[2]

सुगंधा के मन में बचपन से ही अनजाने में सही लेकीन विवाह मे बारे में उल्टे-पल्टे विचार बोए हुए थे। उसके विचार से विवाह ही सारे विवादों की जड है, जिसमें माता-पिता के विवादित जीवन ने पोषण का कार्य किया। रिश्तो का बिखराव, उससे मिलनेवाली टीस, धीरे- धीरे यही भाव उग्र रुप लेता चला गया। कई प्रश्न उसके अबोध मन में जमा होते गये उसके मन में विवाह मात्र बंधन बनकर रह गया, जो केवल अधिकारों का हनन करता है। उसमें कहीं प्रेम नही हैं, "बंधन! बंधन के जो रुप मैने अब तक देखे थे, उनमे स्त्री को ही बंधे हुए पाया था। पुरुष तो बंधकर भी

उन्मुक्त था, पूर्ण उन्मुक्तता"[3] इस तरह वैवाहीक जीवन का विकृत रुप ही उसके सामने उसने पाया था।

यही कारण हैं कि यह जब भी सोचती है कि विवाह करके माँ को क्या मिला? तो उसे कोई अच्छी बाते दिखाई ही नहीं देती। "जब भी मैं विवाह के बारे में सोचती तो मेरा मन मुझसे कहता, माँ को क्या मिला विवाह करके? एक उपन्यास ही तो न? और एक टॅग श्रीमती का।" सुगंधा का इस तरह वैवाहीक जीवन के बारे में धारणा बनाना अचंबित नहीं करता क्योंकि माता- पिता के अलगाव के बाद यह सभी रिश्तों से अलग हो गई थी। उसका दायरा सिमटकर रह गया था। जो व्यवहारीक ज्ञान रिश्तों की पाठशाला में मिलता हैं उससे वह अनजान ही रह गई। वैवाहिक जीवन के सकारात्मक परिणाम होते हैं। यह उसे पता ही नहीं है, वह सिर्फ यह जानती है कि विचार के बाद औरत को मारने- पिटने का अधिकार पुरुष को मिल जाता है। पुरुष सत्ता के प्रति उसका दृष्टीकोन उदासीन रहा यहाँ तक कि अपने नाम में भी केवल पिता की मंशा दिखाई दी, "यह नाम मुझे पिता ने दियाँ माँ की अपनी कोई पंसद नही,"[4] या सब बातें थी जो उसके अंदर विष की तरह भी जिसका वमन तो होना ही था। जब सेलट आंटी उसके माँ को गालियां देती रही और वह घबराई हुई खडी देख रही थी तब वह कहना चाहती है कि, "सेलट अंकल स्वयं आते हैं, माँ की मजबुरी का फायदा उठाने।" लेकीन वह कह न सकी। बस रोती रही, लेकिन वह सोचती है की, "मुझे एक बार फिर 'बडी' होने की आवश्यकता है।"[5]

रीता चूडासामा के साथ बिताएँ हुए उसके दिन उसे बहुत ही अजीब महसुस होते है। रीता से उसे यौन संबंधो की जानकारी मिल जाती है। "रिता ने मेरे जीवन में एक अलग ही प्रभाव डाला यदि सच कहा जाय तो यौन संबंध की जानकारी पहली बार उसीने मुझे दी।" रिता से मिले आधे -अधूरे ज्ञान का प्रयोग उसने रितीक के साथ किया। अर्थात जहाँ बचपन में रिश्तेदारों के साथ अच्छे व्यवहार पर चर्चा या बरताव, संबध होते है। वहाँ केवल स्त्री पुरुष के संबंधो के बार में देखा और सुना। इस वजह से उसके लिए यही दुनिया का अहम हिस्सा हो गया।

जब कि वह कहती है, "देह की भूख ने मुझे कभी इतना प्रभावित नहीं किया जितना प्रेम की प्यास ने। मुझे सदा यही आकांक्षा रहती कि कोई ऐसा हो जो मुझे और सिर्फ मुझे चाहे।[6] किन्तु सुगंधा का सा जीवन देहरा की भुख और प्रेम की बीच उलझकर रह गया। माना देह सुख की अपनी प्राथमिकता है किन्तु यहाँ लगता है कि सुगंधा स्वयं स्त्री देह बनी हुई हैं उससे परे वह जाना नही चाहती है।

अपने माँ के टोकने पर भी वह उनकी बात को उतना महत्व नहीं देती है। माना की नियती ने उसके बचपन को उलझाये रखा लेकिन यौवन की उलझने तो उसने खुद ओढ ली ऐसा ही दिखाई देता है। माँ का विरोध वह उनके अतीत के परतों के बीच हटा देती है सेलट अंकल के साथ के उनके सम्बंधो ने उनके बेटी के समक्ष उन्हें बाना बना दिया था। इसी कारण वश वह अपने बेटी को अपने मत के अनुसार रास्ता दिखा नहीं पायी।

सेलट अंकल के उनके घर आने से जो समस्याऐं उनके जीवन में आई वही समस्याएँ रितिक के उसके घर पर आने से उत्पन्न होती है। 'हमे घर बदलना होगा।' माँ ने अचानक एक दिन कहा।

'क्यो?'

'मकान मालिक यही चाहता है।'

'लेकिन क्यों? क्या किराया बढाना है उसे?'

'नहीं। उसका कहना है कि हमारे घर अच्छे लोंग नहीं आते है?'

इसी प्रकार रितिक जब सुगंधा के घरपर आता है तो उन्हें भी मुहल्लेवालों से यही सुनना पडता है तथा एक बार नहीं तो बार-बार मकान बदलना पडता है।

यह कहाँ तक उचित हे कि हम समाज दृवारा अपने निजत्व पर घात होते देखते हैं तो समाज को दफियानुसी कहते है। रितिक एक जगह कहता है की, "हमारा हद दर्जे का दकियानूसी है। तथा सुगंधा कहती है, "अपना लाभ हमें वैधानिक लगता है,। अपनी सफलता हमें न्यायोचित लगती है , अपना जीवन सामाजिक लगता है, दूसरो का लाभ दूसरों की मान्यता से एतराज है किन्तु अपनी सुविधा हेतु इस संबंधों का प्रयोग करते। से वे ना नहीं करते। मकान की रजिस्ट्री में पति-पत्नी के रुप में नाम दर्ज 'सुगंधा पत्नी रितिक शर्मा'[7] उन्हे प्रश्न के घेरे में रखते है। वहीं साथ रहते-रहते उन दोनों के अवचेतन में एक दुसरे प्रति पती पत्नी का भाव जागृत हो गया। भले ही वे मानने से इंकार करते हो। सुगंधा एक गृहिणी, पत्नी का भाव लेकर ही जीती रही रितिक के साथ। तथा सहकर्मी के बच्चों को देख उसमें मातृत्व भी जाग उठा।

घर खरिदते वक्त रितिक और सुगंधा की बात हो रही तो वह कहती है, 'नहीं, मेरा मतलब यह नही है, मैंने तो बस यूं ही पूछा। पता नहीं क्यों में सक्त नहीं हो पाई। शायद घर का मामला था ओर मेरे भीतर बैठी गृहिणी भी ठीक वैसे ही बडा-सा घर पाना चाहती थी। या फिर मैं रितिक को क्रोध और आक्रोश से डरने लगी थी, एक पत्नी की भांति।

एक समय ऐसा आता है कि रितिक का सुगंधा के प्रति बर्ताव बदल जाता है, "वह पहलेवाला रितिक नहीं रह गया था। जो फिल्मी रितिक रोशन की तरह 'कहो ना प्यार है' वाले अंदाज में मेरे चक्कर लगाया करता था। जो बिना विवाह किए 'लिव-इन रिलेशन' में मेरे साथ रहने के लिए अपने स्वयं के घरवालों से भी टकराव ले चुका था। जिस पर धीरे-धीरे सामाजिकता प्रभावी होती चली गई थी और वह हमारे पारस्पारिक प्रेम संबंध को 'अवैध' मानने लगा था।"[8]

सुगंधा और रितिक कितना भी आधुनिक विचारों को ग्रहण कर जिंदगी जीने की कोशिश करें फिर भी वे परंपरा से आये विचारों को छोड नहीं पाते, "मैं महसूस करने लगी थी कि जिस ताजगी को बनाए रखने के लिए हमने विवाह किए बिना साथ रहने का निर्णय किया था, वह ताजगी कहीं पीछे छूटती जा रही है। हम विवाहित नहीं है इसलिए स्वतंत्र है कि वह ताजगी इतर व्यक्तियों में ढूंढ सकें। लेकिन मैं जानती हूं कि मेरा स्त्री मन रितिक से इतर, दूसरी देह में चैन नहीं ढूंढ पाएगा।"

सुगंधा रितिक को सोचते हुए अतीत में उतरती है। वह अपने बारे में रितिक के दृष्टीकोन से सोचती है "क्या मैं सचमुच वैसी हूं। जैसा रितिक कहता है, 'किसी भी पुरूष को देखकर लार टपकाने वाली ?'"[9] सुगंधा रितिक के प्यार में इतना डूब चुकी हैं कि वह उसके बारे में हमेशा सोचती है। इतना ही नहीं वह सकती है, मैं उसे बहुत प्रेम करती थी, और अब कहना कठिन है कि मेरे मन में उसके प्रति कितना प्रेम शेष है। फिर भी वह मेरे साथ हर समय रहता है, सशरीर नहीं, एक प्रभाव बनकर, एक छाया बनकर मैं अब किसी भी पुरुष को देखती हूँ किसी पुरुष के ताप को अनुभव करना चाहतीं हूँ तो मेरा मन उससे तुलना करने लगता है।"[10]

कई बार पुरुष जो होते है, न कहते हुए भी बहुत कुछ कह जाते है, या कुछ ना करतै हुऐ भी बहोत कुछ कर जाते है। जैसे की सुंगधा और रितिक का विवाद संभवतः स्त्री पुरुष के सामाजिक अस्तित्व को लेकर ही बार-बार आकार लेता और मिटता रहा या फिर कुछ समय के लिए शांत हो जाता। वह कभी शारीरिक रुप से पलटवार नहीं किया करता है यह बात बताते समय सुगंधा उसके बारे में और कुछ बताना चाहती हैं, "जब-जब हमारा विवाद हुआ तब - तब रितिक ने शारीरिक रुप से पलटवार नहीं किया। इसलिए नहीं कि रितिक दयालु था, नहीं, इसलिए कि रितिक तो मानसिक चोट देने में उस्ताद था।"[11]

दिल की चोट दिमाग की चोट से भी अधिक खतरनाक होती है। इंसान की जान भी जा सकती है इसमें। देह की चोट तो इंसान सह पाता है लेकीन मन पर जो

चोट होती है वह सहना बहुत कठीन होता है

सुगंधा का रितिक के बाद ऋषभ, विशाल के साथ फिर से संबध बनाना तथा उसके साथ रहते हुए भी रितिक के साथ बितें पलों का याद करना क्या दर्शाता है? क्या सुगंधा का यह भटकाव कोई निश्चित ध्येय को प्राप्त कर पायेगा। क्या वह समाज के बंधन को स्वीकार कर पायेगी या तमाम उम्र यूँ ही बदलाव की जिंदगी जीती रहेगी?

'कस्बाई सिमोन' इस उपन्यास में शरद सिंह ने सहज और वास्तव भाषाशैली का प्रयोग किया है, उपन्यास के सवांद रोचक है तथा कथानक को गति प्रदान करते है। विशाल के साथ संवादों मे नाटकीयता का समावेश भी है। उपन्यास की शैली मुख्यतः आत्मकथात्मक है। भाषा सरल और सरस है। जिस प्रकारका कथानक का विषय है उस हिसाब से लेखिका बेधडक शब्दों का इस्तमाल कर सकती थी लेकिन उन्होंने इससे बचने का पूरा प्रयास किया है क्योंकि कई शब्दों को अधूरा छोडा हैं। "सबके सब साले भ्रष्ट है, इनके तो गा.... पर लात मारनी चाहिए।"[12]

ऐसा करने से भी पाठक शब्द और भाव समझ जाता है, । लेकिन लेखिका का इनसे परहेज करना बताता है कि वह उपन्यास में भाषा के प्रयोग को लेकर सचेत है। इस उपन्यास द्वारा लेखिका शरद सिंह ने यथास्थितिको दर्शाया है। इस उपन्यास क माध्यम से यहाँ पुरुष - स्त्री समान हो, यहाँ औरत दोयम न हो, रखैल न हो। यहाँ रिश्तों का आधार प्रेम हो इसका दायित्व वह पाठक के ऊपर छोडती है। वर्तमान समाज का यर्थाथवादी चित्रण करने में लेखिका सफल रही है।

सुगंधा जिन परिस्थितियों मे गुजरती है जिस कारण वह 'लिव-इन रिलेशन' की विचारधारा को अपनाती है उसपर भी सोचने की जरुरत है। उसका व्यक्तित्व जिस माहौल से गुजरा है या उसका बचपन में ही पिता का घर छोडना, उसके पिता का उसके साथ बेरुखा सा बरताव उसके बाद माँ बेटी का जीवन संघर्ष, मकान मालिक के बेटे मोहन द्वारा नाबालिग सुगंधा के साथ जबरदस्ती, सेलट अंकल का घर आना फिर उनकी पत्नी का घर आकर उसकी माँ को जलील करना, उस पर सेलट अंकल का संबंध तोड देना, माँ का सेलट अंकल से अलगाव के बाद टूँटना, पल्लवी मिश्रा का दहेज वेदी पर झुलसना ये सारे घटनाक्रम सुगंधा के जीवन से प्रत्यक्ष -अप्रत्यक्ष रुप से जुडे रहे है। इन सब घटनाओंको प्रभाव उसके मन-मस्तिष्क पर हुआ है। तथा इससे जो भी उभरा है वह सुगंधा के रुप में हमारे सामने आता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि सुंगधा कस्बे में रहते हुऐ भी 'लिव इन रिलेशन' को अपनाती है। क्योंकि उसने अपने बचपन से इन उलझी हुई स्थितीयों का सामना किया है। यहाँ

स्थितीयाँ ऐसी है कि, एक मासूम बचपन को इस बात का चुनाव करना है, कि वह पापा के साथ रहे या माँ के साथ ---- "सुगंधा ! तू मेरे साथ रहना चाहोगी या अपने पापा के साथ ?"

कथानक की दृष्टी से आजकल की जीवन शैली को विषय बनाया गया है, लेकिन यह जीवन शहरों में फैला हैं न की गाँव में। लेकिन इस विषय के माध्यम से समाज की दशा, समाज में स्त्री की स्थिति दाम्पत्य संबंधों को भी विषय बनाती है। स्वतंत्रता का प्रश्न भी उठाती हे। स्त्री की समस्याए इस उपन्यास के केंद्र में है। इस उपन्यास में लेखिका ने कामजीवन के साथ- साथ प्रेम को भी दिखाया है आधुनिकता की दुहाई देनेवाले समाज के पिछडेपन को बडी सुंदरता से वर्णित किया हैं। तथा अर्थिक सबलता का महत्व भी प्रतिपादित किया है।

संदर्भ :

- द सेंकड सेक्स सिमोन द बोउवार
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 98
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 31
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 12
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 61
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 25
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 137
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 152
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 14
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ

संख्या 11
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 13
- कस्बाई सिमोन, डॉ.शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 122
- समीक्षा, सम्पादक सत्यकाम, अप्रैल जून 2013

महाविद्यालय के संदर्भ में

श्री. हरिहर प्रतिष्ठान संचलित गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय की स्थापना वर्ष २०१२ में हुई। आर्थिक और सामाजिक रुप से पिछडे क्षेत्र को उच्च शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करने के लिए एक नेक इरादे के साथ स्थापित किया गया है। इस संस्था को अस्तित्व मे लाने के लिए श्री धनराज जोशी जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पुरे मराठवाडा क्षेत्र में यह पंहला रात्र महाविद्यालय है। 'काम करते हुए सीखना' हमारे संस्था का ब्रिदवाक्य है। महाविद्यालय ने शैक्षणिक वर्ष २०१८-१९ में १८ फरवरी २०१९ को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया है।

महाविद्यालय की प्रमुख विशेषताए

- शिक्षा के प्रवाह से दुर रहनेवाले छात्रों को उस प्रवाह में सम्मिलित करने वाला पहिला रात्र वाणिज्य महाविद्यालय है।
- अभ्यासक्रम अंग्रेजी के साथ - साथ मराठी माध्यम का भी चूनाव।
- NPTL लोकल चॅप्टर रखनेवाला देश का एकमात्र रात्र वाणिज्य महाविद्यालय
- अत्यावश्यक आधारिक संरचना, सुसज्ज संगणक प्रयोगशाला, व्यवसाय प्रयोगशाला, अच्छा पर्यावरण तथा अनूकूल परिसर
- सामाजिक खेल और सांस्कृतिक गतिविधीयों में छात्रों की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

WIZCRAFT
Publications & Distribution Pvt. Ltd.
Registered Office:
129/498, Vasant Vihar, Near Old Pune Naka, Solapur- 413 001 (Maharashtra) India
09637335551, 07020828552 E-mail:wizcraftpublication@gmail.com

ISBN 978-93-86013-83-5
9 789386 013835

Rs. 500/-